

तल्लनणपरो ग्रन्थविशेषो लल्लणयोक्त्यम् SIDDH. K. zu P. 4, 2, 60. — c) ein aus 4 Mal 1 Silbe bestehendes Metrum COLEBR. Misc. Ess. II, 138. Vgl. उक्त 2, b. Nach der KHANDOMĀṆGARI und dem KHANDORĀYA im ÇKDr. उक्त्या. — 2) m. a) eine Form von Agni: उक्त्यो (उक्त्यो?) नाम महाभाग त्रिभिर्हवैरभिष्टुतः MBh. 3, 14154. — b) N. pr. eines Fürsten VP. 386. — Vgl. अनुक्त्य.

उक्त्यपत्र (उ° + प°) adj. Sprüche zu Flügeln habend VS. 17, 55.

उक्त्यपात्र (उ° + पा°) n. Schalen (Libationen), welche während der Recitation der Uktha aufgesetzt werden, Nir. 5, 11. मामहान (oder ममहान) उक्त्यपात्रम् P. 6, 1, 7, Vārtt. 4.

उक्त्यभृत् (उ° + भृत्) adj. Sprüche darbringend: उक्त्यभृतं सामभृतं विभर्ति यावाणं विधत्तं वेदात्यये RV. 7, 33, 14.

उक्त्यवत् (von उक्त्य) adj. mit einem Spruch verbunden Ait. Br. 3, 1.

उक्त्यवर्धन (उ° + व°) adj. an Lobpreis sich stärend, sich ergötzend: तं हि स्तोमवर्धनं इन्द्रास्युक्त्यवर्धनः RV. 8, 14, 11; vgl. 1, 10, 5.

उक्त्यवाहम् (उ° + वा°) adj. 1) der Sprüche darbringend: ये विप्रा उक्त्यवाहोऽभिप्रमन्त्रुरायवः RV. 8, 12, 13. — 2) dem Sprüche dargebracht werden: इन्द्राग्नी उक्त्यवाहसा स्तोमैर्भिरुच्युता (या गतम्) RV. 6, 59, 10, 104, 2. — Vgl. VS. 26, 8.

उक्त्यशंसिन् (उ° + शं°) adj. 1) lobpreisend RV. 6, 45, 6. स वीरं धेत्तुः अयं उक्त्यशंसिन् तमना सहस्रोपिणाम् 8, 92, 4. — 2) die Uktha sprechend TS. 3, 2, 9, 6.

उक्त्यशंस (vor consonantisch anlautenden Casusendungen) und उक्त्यशंसम् (उ° + शं°) adj. P. 3, 2, 71 nebst Vārtt. 8, 2, 67, Sch. Vop. 26, 65, 3, 107—109, 153. den Spruch sprechend, lobpreisend: ब्रह्माणिव विद्वं उक्त्यशंसा RV. 2, 39, 1, 4, 2, 16. नरः शंसत्युक्त्यशंस उक्त्या 7, 19, 9. 10, 82, 7. यज्ञस्य सामगामुक्त्यशंसम् 107, 6. TS. 3, 2, 9, 1. Kāṭh. Çr. 9, 13, 33, 14, 12.

उक्त्यशंस adj. dass.: तस्मादुक्त्यशंसं भूयिष्ठं परिचलते Çat. Br. 10, 5, 2, 5.

उक्त्यश्रुम् (उ° + श्रु°) adj. in Sprüchen dahin rauschend, mit rauschenden oder brausenden Sprüchen versehen: समुद्रं न सिन्धवं उक्त्यश्रुम्मा उरुव्यवसं गिरा विशन्ति RV. 6, 36, 3. dem rauschendes Lob dargebracht wird, die Âditja 10, 63, 3.

उक्त्यामर्द (उक्त्य + मर्द) n. Preis und Jubel AV. 5, 26, 3. बृहस्पतिरुक्त्यामर्दानि शंसिषत् Ait. Br. 2, 38. अग्निर्यजुर्भिः सविता स्तोमैरिन्द्र उक्त्यामर्दैर्बृहस्पतिश्कुन्दोभिः Kāṭh. 9, 10. Taitt. Âr. 3, 8.

उक्त्यार्क (उक्त्य + अर्क) n. Spruch und Lied: पस्पृध इन्द्रे अद्युक्त्यार्का RV. 6, 34, 1.

उक्त्यावैरी (उक्त्य + अवैरी) adj. spruchliebend VS. 7, 22.

उक्त्याशस्त्रं (उक्त्य + श°) n. copul. VS. 19, 28.

उक्त्यन् (von उक्त्य) adj. 1) Sprüche sprechend, preisend, lobend: प्र वामर्षत्युक्त्यनो नीध्याविदोऽजरितारः RV. 3, 12, 5. 8, 15, 6. 31, 2. Vāṭak. 5, 6. — 2) von Preis begleitet; liturg. von Uktha begleitet RV. 3, 52, 1. (सोमासः) कृदा ह्येत उक्त्यनः 8, 63, 8. यन्मा सोमास उक्त्यनो अमन्दियुः 10, 48, 4. VS. 28, 33. उक्त्यन्योऽन्या कोत्रा अनुक्त्या अन्त्याः Ait. Br. 6, 13, 14.

उक्त्य (von उक्त्य) 1) adj. a) von einem Spruch, von Preis begleitet, daraus bestehend; des Preises würdig; des Preises kundig Naigh. 3, 8.

गायत्रम् RV. 1, 38, 4. मह्यम् 40, 5. वचः 83, 3. अग्रे तव तदुक्त्यं देवेभ्यस्त्याप्यम् 100, 13, 12. सुमम् 4, 33, 2. वज्रम् 8, 56, 3. ज्योतिः 9, 29, 2. मर्दम् 48, 2. वसु 19, 1. von Agni 3, 10, 6. 26, 2. von Indra 51, 1. हेतो गृणीत उक्त्यः 1, 79, 12. 3, 2, 15. दातो जरित्र उक्त्यम् 8, 55, 2. तद उक्त्यम् 4, 36, 4. अविष्टकंष्टं यदसत् उक्त्यम् 2, 23, 14. 10, 11, 5. 48, 9. 96, 5. क्रव्यादमाग्नें शशमानमुक्त्यम् AV. 12, 2, 10. — b) von Uktha begleitet: अहानि Çat. Br. 12, 3, 5, 12, 13. यज्ञः 13, 5, 3, 9. 4, 9. उक्त्यं पशुबन्धमेके Kāṭh. Çr. 22, 7, 23. 11, 17. 24, 3, 25. — 2) m. a) näml. प्रह, eine Libation bei der Früh- und Mittagsspende: पदुक्त्यो गृह्णते TS. 6, 5, 1, 1. उक्त्यं कृतं सोमा अन्वार्यति 4. Çat. Br. 4, 2, 2, 1. fgg. 3, 2, 5, 1, 3, 19. Kāṭh. Çr. 9, 6, 20. 14, 8. 10, 1, 14. 14, 2, 20. उक्त्यस्यालो Çat. Br. 4, 2, 2, 16. उक्त्यपात्रं 5, 5, 8. — b) näml. क्रतु, N. einer liturgischen Begehung, die einen Bestandtheil z. B. des Gjötiṣṭoma bildet (vgl. Ait. Br. 3, 49, 50. Âçv. Çr. 6, 1) AV. 14, 7, 10. TS. 6, 4, 3, 4. 7, 1, 5, 3. 2, 5, 5, 6. इत्यच्चावाक उक्त्य अयस्यति Ait. Br. 6, 15. 3, 34. Çat. Br. 3, 9, 3, 33. 4, 2, 5, 14. 3, 10, 8. 12, 2, 4, 6, 7. नवाग्निष्टोमा मासि संपद्यते — एकविंशतिरुक्त्याः 2, 6, 7. चतुर्णामुक्त्यानां द्वादश स्तोत्राणि द्वादश शस्त्राण्यतिथयि स सप्तमोऽग्निष्टोमः 12. 13, 7, 1, 5. Kāṭh. Çr. 24, 1, 3. 10, 9, 26. fgg. 12, 3, 1, 18. Âçv. Çr. 5, 10, 9, 3. ein Somajağña Nār. zu Çāṅkh. Gṛh. in Z. d. d. m. G. VII, 527, N. 2. neutr.: ज्येष्ठोऽश्ममेधः संख्यातः कल्पसूत्रेण ब्राह्मणैः । चतुष्टोमकस्तस्य प्रथमं परिकल्पितम् ॥ उक्त्यं द्वितीयं संख्यातमतिरात्रं तथोत्तरम् । R. 1, 13, 14. — उक्त्य = उक्त्य Kāç. zu P. 5, 4, 30.

1. उन् (वन्), उन्ति (उन्ति Dhātup. 17, 5); औन्तः; वन्तः; med. उन्ते; वन्ते; träufeln lassen, sprengen; beträufeln, besprengen: घृतमुन्तत RV. 1, 87, 2. उन्तत्यस्मै मरुते कृता इव पुत्र रक्षांसि पयसा 166, 3. घृतेन नो मधुना तत्रमुन्ततम् 157, 2. 8, 5, 6. औन्तन्धुतेः 3, 9, 9. 62, 16. 5, 63, 5. उन्तेयाम् 7, 64, 4. AV. 12, 1, 7. वर्षेणोन्तन्धु वालिति 18, 2, 22. Çat. Br. 14, 5, 5, 13. वाङ्मे चन्द्रेनैकमुन्ततः MBh. 1, 4605. औन्तन्धु शोणितमम्भोदाः Bhaṭṭ. 17, 9. उन्ता प्रचक्रतुर्नगरस्य मार्गान् 3, 5. med. träufeln, sprützen: अकृम्यो अयिन्वमुन्तमाणाः RV. 4, 42, 4. तमुन्तमाणांमव्यये वारो पुनन्ति 9, 99, 5. बृहद्विरयो बृहदुन्तमाणाः 5, 57, 8. 42, 14. अमिनती तस्थुतुन्तमाणे (Himmel und Erde) 4, 56, 2. sprühen (Funken): तमुन्तमाणां (अग्निं) रजसि स्व आर्दमे चन्द्रमिव मरुचं ह्वार आर्दधुः 2, 2, 4. partic. उन्तितं besprengt, benetzt: तस्य कान्तास्युन्तितः AV. 5, 3, 8. तौ पितृर्नयनेन वारिणा किञ्चिदुन्तितः शिखायुक्ता Ragh. 11, 6. गङ्गाजलोन्तितः MBh. 13, 1791. Kumāras. 1, 55. शोणितोन्तितः Sāv. 6, 5. R. 2, 97, 29. 3, 7, 8. 5, 42, 20. Ragh. 11, 20.

— अनु act. med. beträufeln, besprengen; besprühen: अनु श्रिया त्वन्मुन्तमाणाः RV. 6, 66, 4. उन्ता ह यत्र परि धानम्भोत्तरान् स्व धाम जरितुर्वन्तं 3, 7, 6.

— अग्नि act. besprengen: अग्निः Çat. Br. 2, 1, 1, 3. 3, 1, 2, 19. Bṛh. Âr. Up. 6, 4, 19, 23. संचरमन्युक्त्य Kāṭh. Çr. 3, 4, 1. 5, 24. 4, 8, 16. Âçv. Gṛh. 1, 3. Kauç. 80. MBh. 1, 6770. 3, 6030. Suçr. 1, 6, 16. शिरसि शकुन्तलामन्युक्त्य Çāṅk. 41, 4. med. besprühen (mit Funken): उन्ता मूढा अग्नि ववन् एने RV. 1, 146, 2. अन्युन्तितः besprengt: अन्युन्तितोऽसि सलिलैः Māñdh. 146, 20. क्विरन्युन्तितः R. 2, 114, 5. — Vgl. अन्युन्ता.

— अय besprengen: द्वा मधुमिश्रेणावोन्तति TS. 5, 4, 5, 2. 6, 2, 7, 3. उद्धतमवोन्तितं भवति Çat. Br. 6, 4, 4, 18. 8, 1, 12. 9, 1, 2, 21. — Vgl. अयोन्ता.